# मेअराज की यात्रा एवं अल्लाह का दीदार

अल्लाह तआला ने निर्माण के मार्गदर्शन एवं हिदायत के लिए पैगम्बरों को नियुक्त किया। प्रत्येक नबी को इन के दौर के अवश्यकताओं के अनुसार मुअजज़ात प्रदान किए। संप्रदाय जिस कला व फन में उच्चता रखती थी पैगम्बर भी इसी गुण एवं इसी प्रकार से इस प्रतिभा व वैभव का मुअजज़ा पेश करते के सम्पूर्ण सदस्यों की बुद्धि दंग रह जातीं।

क़ियामत के सवेरे तक आने वाली सम्पूर्ण मनुष्य जाति क्यों के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ही की संप्रदाय है तथा इस संप्रदाय में क्यों के साईन्स व टेकनॉलोजी उच्चता पर पहुँचने वाली थी।

अर्थात अल्लाह तआला ने इसलाम को दरपेश होने वाले सम्पर्ण चुनौतियों का उत्तर देते हुए इसलाम की सच्चाई को स्पष्ट कर दिया।

*मेअराज से संबंधित हिकमतें*

अल्लाह तआला ने इस संसार में कम व अधिक 1,24,000 पैगम्बरों को भेजा है, तथा प्रत्येक नबी को इस दौर के अनुसार से करामतें प्रदान की, किन्तु अपने हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को करामतों का केन्द्र बना कर भेजा।

अल्लाह तआला ने अन्य पैगम्बरों को भी मेअराज प्रदान की किन्तु जिस प्रकार गौरव व प्रतिभा वाली मेअराज आप को प्रदान की इस प्रकार की मेअराज किसी और को प्रदान नहीं की।

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने रात के सीमित से हिस्से में अपेन पावन शरीर के साथ जागने की स्थिति में मसजिद हराम

से मसजिद अक़्सा, बरज़क़, पूर्ण कायना, सातों आकाशों की सैर की, जन्नत व दोज़ख का दर्शन किया। मलिकाओं के स्थान, प्रकृति का दर्शन किया। सिद्रुल मुन्तहा एवं अर्श के दीदार का सुख व आनन्द प्राप्त किया।

नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मेअराज में अल्लाह के अर्श पर जाना ही मुअजेज़ा व करामत नहीं है बल्कि आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) का वापस आना भी करामत है। क्यों के आप नूर हैं तथा मानवीय वस्त्र में यहाँ उजागर हुए है।

रात के सीमित से हिस्से में उच्च स्थान की सैर करना पर गए ये आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की मानवीय प्रतिभा की करामत है, तथा नूर हो कर लोगों के बीच रहना, व्यापार व मामलात करना, खाना-पीना ये आप की नूरानियत की प्रतिभा का मुअजेज़ा है।

*मानवीय की विशेषष प्रतिभा*

प्रत्येक व्यक्ति इस बात से स्पष्ट रूप से अनुभव है के मनुष्य को जीवन गुज़ारने के लिए चंद चीज़ों की अवश्यकता होती है, भोजन, वस्त्र एवं मकान, ये जीवन की अवश्यकताएँ कहलाते हैं, जिन पर जीवन निर्भर होता है। ये चीज़ें प्रत्येक प्राणि के जीवन का भाग है।

अल्लाह तआला ने मेअराज की रात सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मानवीय की विशेषक प्रतिभा को इस रूप से स्पष्ट किया के कोई प्राणि मकान के बिना जीवित नहीं रह सकता तथा – उपयोग किए बिना पूर्ण कायनात (ब्रह्माण्ड) से गुज़र नहीं सकता।

किन्तु सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मेअराज की रात पूर्ण कायनात से गुज़रे तथा लामकाँ पहुँचे। ये आप की मानवीय का गौरव है। इसी प्रकार मनुष्य बिना भोजन नहीं रह सकता। परन्तु

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की करामती प्रतिभा है के आप बिना सेहर व इफ्तार के लगातार रोज़ा रखा करते।

सहाबा किराम भी आप के पालन में लगातार रोज़े रखने लगे तो इन पर कमज़ोरी तारी होने लगी, नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः

भाषांतरः तुम में कौन मेरी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) तरह है? मैं अपने पालनहार के पास रात बिताता हुँ, मेरा रब मुझे खिलाता एवं पिलाता है।

(सहीह बुखारी, हदीस संख्याः 1965)

ये एक अटल सच्चाई है के फरिश्ते नूर से उत्पन्न किए गए तथा हज़रत जिब्रील अमीन अलैहिस सलाम सम्पूर्ण फरिश्तों के सरदार व मुख्य हैं। तो स्पष्ट है के वे नुरानियत में सम्पूर्ण मलीकाओं में उच्च हैं, किन्तु हज़रत जिब्रील अमीन अलैहिस सलाम भी मेअराज की रात सिद्रतुल मुन्तहा पर रुक गए तथा निवेदन करने लगेः

या रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! यदि मैं इस स्थान से उंगली के पूर के समान भी आगे बढ़ुँगा तो अल्लाह तआला की तजल्लियों के कारण से जल कर खाक हो जाउँगा। जैसा के तफसीर रूह उल बयान में हैः-

भाषांतरः हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने जिब्रील से फरमायाः क्या ऐसे स्थान पर कोई मित्र अपने मित्र को छोड़ देता है? तो जिब्रील अमीन अलैहिस सलाम ने निवेदन कियाः सरकार! यदि मैं आगे बढ़ुँ तो नूर से जल जाऊँगा, तथा एक रिवायत में हैः यदि मैं एक पूर के समान भी निकट आऊँ तो नाश हो जाऊँगा।

(तफसीर रूह उल बयान, सुरह अल इसराः 01)

अतः नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सिद्रतुल मुन्तहा से आगे बढ़े।

सोंचिए! जो फरिश्ता नूर से पैदा किया गया इस की जात अल्लाह तआला के नूर के प्रकाशन नहीं, किन्तु सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बशरियत की प्रतिष्ठा ये है के आप सिद्रतुल मुन्तहा से आगे गुज़र गए, प्रतिष्ठित व पवित्र दरवाज़ें, अल्लाह तआला के नूर के प्रकाशन की आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) पर वर्षा होती रहती है।

इस प्रकार मेअराज की यात्रा के द्वारा संसार पर उजागर किया गया के जिब्रील अमीन अलैहिस सलाम मलीकाओं के मुख्य की स्थिति ये है के बावजूद नूरानी होने के इन अल्लाह तआला के नूर के प्रकाशन की ताब ना सके तथा हबीब करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की प्रतिभा ये है के आप प्रत्येक आन अल्लाह तआला से निकटता की मंज़ीलें तय करते हैं तथा आप पर प्रत्येक दम नव तजल्ली व प्रकाशन का प्रकट होता है जैसा के अल्लाह तआला का वचन हैः-

भाषांतरः अए हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसलल्म! आप की प्रत्येक आने वाली घड़ी (अवधि) पिछली घड़ी से उत्तम है।

(सुरह अज़ ज़ुहाः 93:04)

आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम केवल इन अनवार व प्रकाशन का दर्शन ही नहीं करते बल्कि संप्रदाय को इन के आशीर्वाद व बरकतों से संबोधित भी करते हैं।

मेअराज की यात्रा के द्वारा इस प्रकार संसार पर उजागर किया गया के जिब्रील अलैहिस सलाम फरिश्तों के सरदार की परिस्थिति ये है बावजूद नूरानी प्राणी होने के अल्लाह तआला के अनवार को सहन ना कर सके तथा हबीब करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की उच्च प्रतिभा ये है के आप पर प्रत्येक दम नव तजल्ली व प्रकाशन होता है तथा आप सम्पूर्ण होश में रहते हुए इन जलवों से संबोधित होते जाते हैं। क्यों के अल्लाह तआला का वचन हैः

भाषांतरः अए हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! आप की प्रत्येक आने वाली घड़ी पूर्व घड़ी से श्रेष्ठतर है।

(सुरह अज़ ज़ुहाः 04)

*धरती के फर्श पर उच्च स्थान का दर्शन*

युँ तो सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला के प्रदान से धरती के फर्श पर रह कर प्रकृति के अचरच एवं उच्च स्थान की वास्तविकता को अपनी नूरानी आँखों से देखा करते हैं, जन्नत व दोज़ख का दर्शन करते हैं।

अल्लाह तआला सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को आकाशी कायनात की यात्रा करवाए बिना धरती पर ही उच्च स्थान (जन्नत व दोज़ख) की सैर एवं जन्नत व दोज़ख का दर्शन करवाता है, जैसा के सहीह बुखारी में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, उन्होंने फरमायाः हज़रत रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के धन्य काल में सूर्य ग्रहण हुआ, तो सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने कुसूफ की नमाज़ संपादन की, सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने निवेदन कियाः

या रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! हम ने आप को देखा के आप ने किसी चीज़ को अपने धन्य हाथ में लेने का उद्देश्य किया फिर हम ने देखा के आप पीछे की ओर आ गए, तो सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः निश्चय मेरे सामने जन्नत पेश की गई तथा मैं ने उस से अंगूर का गुच्चा लेने का उद्देश्य किया (फिर मैं ने इस उद्देश्य को छोड़ दिया) तथा यदि मैं इस को ले लेता तो तुम रहती दुनिया तक उसे खाते रहते वह कभी समाप्त ना होता।

(सहीह बुखारी, हदीस संख्याः 706)

जब सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम धरती पर हो कर आकाशी कायनात व ब्रह्माण का दर्शन करते हैं तो फिर आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) को मेअराज की रात आकाशों पर क्यों बुलाया गया?

मेअराज की यात्रा का लक्ष्य केवल प्रकृति के अचरच का दर्शन करवाना ही ना था बल्कि अपने निकटता से आभूषण कर के वार्तालाप व दीदार के संबोधन करना भी उद्देश्य था एवं इस के द्वारा सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की प्रधानता व विशालता को सम्पूर्ण निर्माण पर उजागर करना स्वीकार था।

मेअराज के उद्देशों के लिए इफादतुल इफहाम, जिल्द 02, लेखकः शैखुल इसलाम इमाम अनवारुल्लाह फारूखी रहमतुल्लाहि अलैह, प्रवर्तक जामिया निज़ामिया।

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मक्के में लगातार धर्म के प्रचार व इसलाम के प्रसारण करते रहे तथा लोगों को धर्म की ओर

निमन्त्रण देते रहे। एहसास करने वालों ने आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के पावन दाम से नाता प्राप्त किया किन्तु मक्के वाले अस्वीकार करने वाले लोग, उल्लंघन करते रहे।

इस को दर्शन करने के बाद सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इसलाम के निमन्त्रण के लिए ताईफ की ओर यात्रा की। वहाँ आप ने इसलाम की दावत दी, किन्तु ताईफ के निवासियों ने ईमान लाने के बजाए आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के साथ अनेक प्रकार की शरारतें शुरु कर दी।

नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर पत्थर बरसाए जिस से आप के पावन क़दम खून से भर गए तथा आपके पवित्र जूते खून से भर गए। ताईफ की धरती में दी गई वेदना व तकलीफ से हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम के पावन हृदय पर दुःख तारी था अल्लाह तआला ने अपने हबीब के प्रोत्साहन के लिए तथा आप को प्रसन्नता प्रदान करने के लिए तथा निर्माण पर आप का आदर व सम्मान उजागर करने के लिए अपने विशेष सामीप्य में इच्छा कया ताकि संसार व दुनिया वालों के सामने आप का उच्च स्थान प्रकट हो जाए तथा जिन धन्य क़दमों को ताईफ में घायल किया गया ये वे पावन क़दम हैं के अल्लाह तआला का अर्श भी इन को चूम कर बरकतें प्राप्त करता है तथा जिब्रील अमीन भी अल्लाह तआला के सामीप्य में रहने के बावजूद बरकतों के सिलसिले में इन दन्य क़दमों के मोहताज है।

*सिद्रतुल मुन्तहा पर नमाज़ संपादन करने का कारण*

हज़रत जिब्रील अलैहिस सलाम जिस प्रकार सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की पावन सेवा में उपस्थित को कृपा का साधन समझते इसी प्रकार अपने स्थान सिद्रतुल मुन्तहा में सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के आने को बरकत व कुशलता का साधन जानते।

भाषांतरः जिब्रील अलैहिस सलाम ने निवेदन कियाः या रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! मेरी आप से एक विनती है, नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कहो! वे क्या है? उन्हों ने निवेदन कियाः मेरी इच्छा है के आप यहाँ 2 रकात नमाज़ संपादन करें ताकि मेरा स्थान आप के पावन क़दमों की बरकत से उजागर हो जाए।

(मेअराज उन नबूवत, पः 931)

*नूरानियत की विशेषक प्रतिभा*

आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की नूरानियत की प्रतिभा के नूरानी वर्णित हैः-

सरकार पाक सल्ल्ललाहु तआला अलैहि वसल्लम की नूरानियत की उच्चता ये है के आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने अपने माथे की आँखों से अल्लाह तआला का दर्शन व दीदार किया, तथा दीदार भी इस प्रतिभा से किया के अल्लाह तआला फरमाता हैः-

भाषांतरः (सत्य के दर्शन के समय) उन की आँख ना किसी और तरह आकर्षित हुई तथा ना हद से बढ़ी (जिस को तकना था इसी पर जमी रही) निश्चय उन्हों ने (मेअराज की रात) अपने रब की बड़ी निशानियाँ देखीं।

(सुरह अन नज्मः 53:17-18)

आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नूरानियत की विशेषक प्रतिभा वर्णन करते हुए ज़ुबदतुल मुहद्दिसीन हज़रत अबुल हसनात सैय्यद

अब्दुल्लाह शाह नक्षबंदी मुजद्दिदी खादरी मुहद्दिसे-देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः

मेअराज की रात जब आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की सवारी निकली तो) 70,000 फरिश्ते सीधे ओर एवं 70,000 फरिश्ते बायें ओर, प्रत्येक के हाथ में अर्श के नूर की एक एक मशाल (शमादान) थी। बावजूद इस के नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पावन चेहरे के नूर का और ही हाल था। आदेश हुआ जिब्रील! मेरे हबीब के चेहरी पर कई हज़ार परदे पढ़े हुए हैं फिर भी नूर की ये स्थिति है, अच्छा ज़रा एक परदा तो उठाओ! एक परदे का उठना था के नूर के जो लाखों मशालें रोशन व दीप्तिमान थीं हज़रत (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के नूर के सामने कम पढ़ गईं।

(मेअराजनामा, लेखकः हज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह, पः 43)

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जब धर्म के निमन्त्रण के सिलसिले में ताईफ गए तो वहाँ के निवासियों ने (नउज़बिल्लाह) आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) पर पत्थर बरसाए यहाँ तक के पावन क़दम खून से भर गए।

हज़रत सैयदना जिब्रील अमीन अलैहिस सलाम ने मेअराज की यात्रा के आरम्भ से पूर्व सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पवित्र सीने को चाक किया तथा पावन हृदय को बाहर निकाल कर 3 बार ज़म-ज़म से धोया।

इस स्थान पर हदीस व क़ुरान के तफसीर की पुस्तकों व सीरत व इतिहास में इस कर्म का वर्णन नहीं मिलता के धन्य सीना चाक किए जाने पर आप के शरीर से खून का बूंद निकला हो।

क्यों के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम नूर भी हैं तथा बशर भी, खून का निकलना मानवीय (बशरियत) के लक्षण है तथा कून का ना निकलना नूरानियत के लक्षण हैं। आप का पावन शरीर इसी प्रकार पावन हृदय पवित्र सीने से निकालने के बाद भी दस्तूर के अनार जीवित रहना, आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की मानवीय का मुअजेज़ा है, अर्थात आप की प्रतिभा नूरानियत भी बेमिसाल एवं बशरियत (मानवीय) भी बेमिसाल।

*ज्ञान में कृपा में प्रत्येक गुण में सब से उच्च*
*शाहे-कौनेन को प्रत्येक प्रतिभा में एकता देखा*

(लेखक)

शैखुल इसलाम आरिफ बिल्लाह इमाम मुहम्मद अनवारुल्लाह फारूखी, प्रवतर्क जामिया निज़ामिया रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः

*विश्वास ये खुलता नहीं के कौन हैं तथा क्या हैं वे*
*हाँ समझते हैं बस इतना बरज़क़ कुबरा हैं वे*

*रजब के महीने के चुनाव की हिकमत*

नबूवत की घोषणा के बारहवे वर्ष रजब के महीने की 27 रात अल्लाह तआला ने सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को मेअराज प्रदान किया।

अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मेअराज के लिए रजब के महीना का चुनाव किया, रजब का महीना क्यों के अल्लाह तआला का महीना है। इसी विशेष नाते के कारण से अल्लाह तआला ने इस महीना का चुनाव किया।

नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का आदेश हैः-

भाषांतरः रजब अल्लाह तआला का महीना है।

(कंज़ुल उम्माल, हदीस संख्याः 35164)

*सोमवार के दिन की हिकमत*

अल्लाह तआला ने सोमवार के दिन को बहुत सी विशेषता प्रदान कियाः

(1)- रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का जन्म सोमवार के दिन हुआ।

(2)- हज़रत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बेअसत सोमवार के दिन हुई।

(3)- प्रवासन का आदेश सोमवार के दिन हुआ।

(4)- पावन देहान्त जो वास्तव में आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की उम्मत के लिए बड़ स्तर व मरतबे का दिन है, वह घटना भी सोमवार के दिन हुई।

(5)- जिस दिन की रात मेअराज के लिए नियुक्त की गई वह भी सोमवार के दिन की थी।

अतः सोमवार के दिन को ऐसी बढ़ाई दे कर शुक्रवार के खरीब-खरीब पहुँचाया ताकि दुसरा गवाह भी उम्मत के लिए तैयार रहे। इस प्रकार संप्रदाय के मुक्ति व मोक्ष का पूर्ण सामान कर दिया।

इन और दो रातें इस संप्रदाय के काले कर्म को नूरानी बनाती हैं ताकि क़ियामत के दिन संप्रदाय को नूर ही नूर बना कर ग़ौरों के सामने लाएँ संप्रदाय की ज़र्रे बराबर नेक-कर्म इन दिनों की बरकत से नेकों के पर्वत बन कर सामने आएँगे।

ये कारण थे के सोमवार (पीर) की रात मेअराज के लिए नियुक्त व निर्धारित हुई।

(मेअराजनामा, लेखकः हज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह, पः 350

*मेअराज की घटना रहस्य*

मेअराज की घटना में हज़ारो हिकमतें गुप्त हैं। जिस को ज्ञानी लोग जानते हैं। सुरह बनी इसराईल की प्रथम आयत में जो मेअराज की घटना का वर्णन किया गया है इस धन्य आयत के आरम्भ शब्द *सुब्हान* के *सीन* से है तथा अंत *बसीर* की *रा* पर है।

मेअराज की आयत के आरम्भ एवं अंत अक्षर को मिलाने से *सिर्र* बनता है जिस का अर्थ गुप्त व राज़ (रहस्य) के हैं। इस आयत में इस बात की ओर इशारा है के मेअराज की घटना अल्लाह तआला के रहस्यों में एक विशाल राज़ व रहस्य है जिस की सच्चाई को सिवाए अल्लाह और इस के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के कोई नहीं जानता।

इसी लिए अल्लाह तआला ने इन रहस्यों की बातों को गुप्त व रहस्य रख दिया। फरमाया हैः

भाषांतरः अल्लाह तआला ने अपने विशेष बन्दे पर जो वही करना स्वीकार था वह वही की।

(सुरह अन नज्म)

*नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मसजिद अखसा जाने की हिकमतें*

निश्चय सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मेअराज की यात्रा के अवसर पर बैतुल मखदस गए। यहाँ ये प्रश्न उत्पन्न होता है के जब आप को आकाशी ब्रह्माण्ड की यात्रा करवाना उद्देश्य था। एवं अल्लाह तआला से वार्तालाप एवं दीदार व दर्शन की कृपा से धनी करना था तो फिर आप को सीधे आकाशों पर क्यों नहीं ले जाया गया। बैतुल मखदस क्यों ले जाया गया, तो इस की हिकमत ये वर्णन की गई केः-

प्रथम हिकमतः हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को मेअराज की रात मसजिद अखसा इस लिए ले जाया गया के काफिरों को सत्यता की दलील हो, क्यों के आकाशों की निशानियाँ काफिरों की देखी हुई नहीं थी।

वे आप के मेअराज का मुअजेज़ा अनुमोदन किस प्रकार करते। क्यों के उन्हों ने मसजिद अक़्सा देखी थी, आप से मसजिद अक़सा की निशानियाँ पूछीं। आप ने मसजिद अक़्सा की निशानियाँ तथा रास्ते में मिलने वाले क़ाफिलों की स्थिति बता दिए ताकि आप की सत्य सूचना के अनुसार काफिरों पर दलील स्थापित हो जाए।

(सुबुलुल हुदा विर्रशाद, जिल्द 01, प्रश्नः- 17)

*बैतुल मक़दस की आरज़ू*

दूसरी हिकमतः इमाम मुहम्मद बिन यूसुफ सालेह रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैः सीरिया देश में क़ियामत का मैदान स्थापित होगा तथा मेअराज में नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को बैतुल मक़दस ले

जाने में अल्लाह तआला का मंशा ये था के जब आप के धन् क़दम को वहाँ पढ़ जाएंगे तो कल क़ियामत के दिन आप की उम्मत व संप्रदाय के लिए सरलता व सुविधाएँ उपलब्ध आ जाएगी तथा आप के पावन क़दमों की बरकत के कारण वहाँ पर ठहरना आसान हो जाएगा।

(सुबुलुल हुदा वर्रशाद, जिल्द 03, पः 180

तीसरी हिकमतः जो हज़रत मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह ने वर्णन की है, आप ने लिखा हैः इस का एक कारण तो ये है के बैतुल मक़दस प्रत्येक समय दुआ करता था के इलाही! सम्पूर्ण पैगम्बरों से मैं संबोधित हो चुका, अब मेरे दिल में कोई आरज़ू बाखी नहीं है, यदि है तो ये है के हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पावन क़दम देखुँ इन की मुलाकात के शौक़ की आग अत्यन्त भड़क रही है। बैतुल मक़दस की आरज़ू पूरी करने के लिए बैतुल मक़दस ले जाया गया।

(मेअराजनामा, पः 29)

*जिब्रील अमीन के उच्च शिष्टाचार*

मेअराज की रात हज़रत जिब्रील अमीन अलैहिस सलाम ने उच्च शिष्टाचार का विशाल उदाहरण पेश किया। जब वे हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पावन दरबार में उपस्थित हुए तो स्वभाव के अनुसार दरवाज़े की ओर से नहीं आए, बल्कि घर की छत से प्रवेश हुए, एवं शासन तो ये हैः

भाषांतरः और तुम गरों में उन के दरवाज़ों से प्रवेश हो।

(सुरह अल बक़रहः 02:189)

इस का एक कारण ये है के फरिश्ते का आदत के विरुद्ध गैर-स्वभाव रास्ते अपनाने में इस ओर इशारा है के ये यात्रा भी असाधारण एवं आदत के विरुद्ध है तथा छत को शख कर के उपर की ओर से प्रवेश होने में इशारा है के आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की यात्रा उच्चता व उत्तमता वाली है।

*यात्रा का आरम्भ उम्मे हानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के मकान से क्यों?*

मेअराज के इस धन्य यात्रा का आरम्ब सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पावन भवन से नहीं बल्कि हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के मकान से हुआ। इस की हिकमत ये है के हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पावन दर के शिष्टाचार ये हैं के आप के दर में बिना आज्ञा प्रवेश होना निषिद्ध है।

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के उच्च दरबार के शिष्टाचार के वर्णन में क़ुरान पाक निम्नलिखित हैः-

भाषांतरः ऐ ईमानवालो! नबी (अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के पावन घर में अनुमति बिना प्रवेश ना हो।

(सुरह अल अह्ज़ाबः 33:53)

तथा इस आदेश में फरिश्ते भी शामिल है, क्यों के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सम्पूर्ण निर्माण की ओर नबूवत व रिसालत की प्रतिभा के साथ भेजे गए हैं जैसा के सहीह मुसलिम में ह्दीस पाक हैः-

भाषांतरः एवं मैं सम्पूर्ण निर्माण की ओर रसूल बना कर भेजा गया हुँ।

(सहीह मुसलिम, जिल्द 01, पः 199, हदीस संख्याः 523 / मुसनद इमाम अहमद, मुसनद अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, हदीस संख्याः 8969 / ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द 05, पः 08)

हज़रत मुल्ला अली खारी रहमतुल्लाहि अलैह ने मिरखात में इसकी शरह (निर्वचन) करते हुए लिखा हैः-

भाषांतरः मैं सम्पूर्ण कायनात, जिन्न व मानव जाति, फरिश्ते, हैवानों, जमादात सब की ओर रिसालत व नबूवत के साथ भेजा गया हुँ।

(मिरखातुल मफातीह, किताब उल फज़ाईल)

इसी लिए फरिश्तों के लिए भी जायज़ नहीं के वे बिला आज्ञा आप के पावन दर में प्रवेश हों। मेअराज की रात आप अपने धन्य भवन में विश्राम नहीं किए बल्कि हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के मकान गए ताकि फरिश्ते दरबारे-मुसतफा के शिष्टाचार एवं अल्लाह तआला के मंशे के अनुसार पावन सेवा में उपस्थित हो।

बन्दा जबा इबादत में व्यस्त रहता है तो वे अल्लाह तआला के विशेष निकटता में होता है, नमाज़ी जब नमाज़ में होता है तो जैसे वे अपने अल्लाह तआला से मुनाजात करता है। एवं सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाते के कथन हैः-

भाषांतरः बन्दा अपने रब से इश समय अधिक निकटता में होता है जब वह सजदे की स्थिति में हो।

(सहीह मुसलिम, हदीस संख्याः 875)

परन्तु अल्लाह तआला ने अपने हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को किसी विशेष इबादत की स्थिति में मेअराज का सन्देश नहीं

भेजा बल्कि आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के विश्राम करने की स्थिति में जिब्रील अमीन को भेजा। जैसे के मेअराज की यात्रा प्रथम से अंत जागते में हुई किन्तु जिब्रील अमीन मेअराज का सन्देश उस समय ले कर उपस्थिति हुए जब के आप विश्राम कर रहे थे।

इस में इस बात की ओर इशारा है के अल्लाह तआला अपने नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के विश्राम करने की अदा को भी इस प्रकार प्रिय रखता है के इस में अपने संबोधन की वर्षा करता है।

विश्राम की स्थिति में अल्लाह तआला की निकटता की ये प्रतिभा है, अल्लाह तआला के दरबार से एक विशाल यात्रा के लिए सन्देश मिलता है तो फिर वह नबी पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जब कअबे के तवाफ में होते हैं, ज़िक्र व दुआ में व्यस्त रहते हैं, अल्लाह तआला के दरबार में विराम होते हैं, धर्म के प्रचार की ज़िम्मेदारी परिणाम देते हैं तो इस समय किसी प्रकार के करामतों व पुरस्कारों की लगातार वर्षा होती रहती है।

एवं सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का विश्राम करना भी इस प्रतिभा व वैभव का है के आप फरमाते हैः-

भाषांतरः मेरी आँख सोती है तथा मेरा हृदय जागता रहता है।

(सहीह बुखारी, किताब उल मुनाखिब, हदीस संख्याः 3304)

इसी लिए आप ने फरिश्ते के प्रवेश होने एवं शिष्टाचार के निराले अंदाज़ को भी वर्णन किया। क्यों के साधारण लोग की नीन्द उपेक्षा की होती है तथा पैगम्बरों (अलैहिस सलाम) की नीन्द की स्थिति व जागरुक दोनों एक ही हैं।

इस प्रकार आप ने रात के सीमिस से हिस्से में मेअराज की यात्रा तय किया। अल्लाह तआला ने आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) को इन उच्च स्थान व स्तर पर आभूषण किया के मानव बुद्धि इन को समझ भी नहीं कर सकती।

*सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सेवा में मलीकाओं के सरदार के शिष्टाचार*

मेअराज की रात जिब्रील अलैहिस सलाम ने सरवर कौनेन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सेवा की विशाल कृपा प्राप्त की, जैसा के तफसीर रूह उल बयान में हैः-

भाषांतरः मेअराज की रात जिब्रील अलैहिस सलाम, मीकाईल अलैहिस सलाम एवं इसराफील अलैहिस सलाम सेवा में उपस्थित हुए तथा इन में प्रत्येक के साथ 70,000-70,000 फरिश्ते थे। जब सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बुर्राख पर सवार हुए तो जिब्रील अलैहिस सलाम बुर्राख की लगाम थाम लिए, मीकाईल अलैहिस सलाम रिकाब पकड़े, तथा इसराफील अलैहिस सलाम ग़ाशिया पकड़े रहे।

(तफसीर रूह उल बयान, जिल्द 05, पः 109)

मेअराज की घटना के अवसर पर सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दरबार में जिब्रील अलैहिस सलाम के उच्च शिष्टाचार से उच्च आदर्श मिलता है।

मुल्ला मोइन काशफी हरवी रहमतुल्लाहि अलैह ने मेअराज की रात जिब्रील अलैहिस सलाम की उपस्थिति की स्थिति से संबंधित रिवायत वर्णन की हैः-

भाषांतरः हिकमत का ज्ञान नहीं था, इस की हिकमत मुझे मेअराज की रात मालूम हुई, वे इस प्रकार के मैं आनन्द के बावजूद सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को उठाने में संपादन कर रहा था तथा चिन्तित था के किस प्रकार उठाऊँ। मुझे आदेश हुआ के अपने चेहरे को आप के पाए मुबारक के तलवे पर मस करूँ, जब मैं ने अपने चेहरे को धन्य पाए पर मला, काफूर की हरार के साथ मली, नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इस्तेराहत के सपने से सुविधा से उठे, इस समय मुजे अपने काफूर से पैदा किए जाने की हिकमत मालूम हुई।

(मआरिज उन नबूवह, पः 601)

*पावन हृदय को स्नान दिया गया*

मेअराज की रात सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पावन हृदय को ज़म-ज़म के पानी से धोया गया। आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) का पवित्र सीना चाक किया गया, इमान व हिकमत से आभूषण उस में उँड़ेल दिया गया, जैसा के हदीस पाक में आता हैः-

भाषांतरः फरिश्ते ने यहाँ (सीने0 से यहाँ (नाफ) तक चाक किया। एवं इस ने मेरा दिल व हृदय निकाला, फिर मेरे पास सोने का एक तश्त लाया गया, जो इमान से आभूषण था, फिर मेरे दिल को धोया गया तथा (अपने स्थान पर0 रख दिया गया।

(सहीह बुखारी, हदीस संख्याः 3887 / मुसनद अहमद, हदीस संख्याः 18312)

जीवन का संबंध दिल से है, हृदय व दिल जीवन का केन्द्र है। कायनात में कोई ऐसा मनुष्य नहीं जो बिना दिल के जीवित रह सके, --- के दौरान भी डाक्टर लोग ऐसा यंत्र का उपयोग करते हैं, जिन की सहायता

से वे दिल एवं शरीर के बीच सम्पर्क अवश्य बाखी रखते हैं तथा इन के कारण से मनुष्य जीवित रहता है।

एवं इधर हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की प्रतिभा ये है के आप का पावन सीना चाक किया गया, ज़म-ज़म के पानी से पवित्र दिल को धोया गया, अनवार व हिकमत के तश्त उँडेले गए, इन सम्पूर्ण चीज़ों की सूचना खूद नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने प्रदान की है।

जीवन का केन्द्र मन बाहर निकाले जाने के बावजूद दस्तूर के अनुसार आप जीवित रहे, मालूम हुआ के जीवन के साधन ज़ाहिर रूप से निकालने से आप के ज्ञान एवं पावन जीवन में कोई अंतर नहीं आता।

इस स्थान पर विस्तार व हदीस, इतिहास की किसी पुस्तक में इस क्रिया का वर्णन नहीं मिलता के पावन सीना चाक किए जाने पर आप के पवित्र शरीर से खून का खतरा निकला हो।

क्यों के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम नूर भी हैं तथा बशर भी, खून का निकलना मानवीय (बशरियत) के लक्षण है तथा कून का ना निकलना नूरानियत के लक्षण हैं। आप का पावन शरीर इसी प्रकार पावन हृदय पवित्र सीने से निकालने के बाद भी दस्तूर के अनार जीवित रहना, आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की मानवीय का मुअजेज़ा है, अर्थात आप की प्रतिभा नूरानियत भी बेमिसाल एवं बशरियत (मानवीय) भी बेमिसाल।

*ज्ञान में कृपा में प्रत्येक गुण में सब से उच्च*
*शाहे-कौनेन को प्रत्येक प्रतिभा में एकता देखा*

(लेखक)

शैखुल इसलाम आरिफ बिल्लाह इमाम मुहम्मद अनवारुल्लाह फारूखी, प्रवतर्क जामिया निज़ामिया रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः

*विश्वास ये खुलता नहीं के कौन हैं तथा क्या हैं वे*
*हाँ समझते हैं बस इतना बरज़क़ कुबरा हैं वे*

*बुर्राख पर सवारी सरकार के लिए*

बुर्राख एक जन्नती सवारी है। आप की पावन सेवा में बुर्राख की सवारी पेश की गई। बजाए इस के ये भी हो सकता था के आप के लिए जगह व दूरी लपेट दिया जाता, धरती समेट दी जाती तथा आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) का एक धन्य क़दम मक्के में होता तथा दुसरा धन्य क़दम मसजिद अख्सा में किन्तु सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिए ऐसा नहीं किया गया।

इस में हिकमत ये है के जगह व दूरी को लपेटना ऑलिया किराम में भी है। इस के विरुद्ध ऐसी सवारी का होना जो दिन में लम्बी दूरी को तय करे ये लोग अम्बया अलैहिस सलाम की विसेषज्ञ प्रतिभा है।

दुसरा कारण ये है के बुर्राख सवारी की अवश्यकता होने की बिना पर नहीं लाई गई। बल्कि बुर्राख को कृपा प्रदान करने के लिए तथा आप की प्रतिभा व गौरव के प्रदर्शन के लिए भेजी जाती है।

इस में मेहमान का आदर व सम्मान उद्देश्य होता है, इसी प्रकार अल्लाह तआला ने अपने बेमिसाल हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को बुलाया तो ऐसी सवारी भेजी जिस पर कोई प्राणि सवार नहीं हुआ।

भाषांतरः धरती समेटने पर प्रकृति के बावजूद सवारी के द्वारा सैर कराने में हिकमत ये है के ये घटना मुअजेज़े (करामत व चमत्कार) के प्रकट के स्थान पर रिवाज व रिवायत के अनुसार स्पष्ट हुआ, क्यों के सामान्य रूप

से रिवाज यही है के राजा किसी व्यक्तित्व को सचेत करता है तो इस के पास अपने राजदूत के साथ उच्च सवारी भेजता है।

(मवाहिब लदुन्निया मअ शरह ज़ुरखानी, जिल्द 08, पः 70)

इस पावन यात्रा के लिए दस्तूर के अनुसार अल्लाह तआला बजाए बुर्राक के किसी और सांसारिक सवारी जो अरब में उपयोग की जाती थी उसे रवाना कर देता, या इस सवारी में में तेज़ी उत्पन्न कर देता तथा उसे भेज देता या भविष्य काल में जो तेज़ रफ्तार सवारियाँ उत्पन्न होंगी उन्हें रवाना कर देता।

परन्तु ऐसा नहीं किया बल्कि जन्नती बुर्राख पेश किया ताकि पता चले बेमिसाल हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिए सवारी भी ऐसी बेमिसाल पेश की जाती है के आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से पूर्व किसी ने इस पर सवारी की है एवं ना आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के बाद दुनिया में किसी और को ऐसी सवारी प्रदान की जाएगी तथा भविष्य काल में उत्पन्न होने वाली तेज़ रफ्तार सवारियाँ पेश की जातीं तो भविष्य में लोग उन्नति व प्रगति कर के इस जैसी सवारी पर सवार होते, इसी लिए अल्लाह तआला ने हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिए जन्नती सवारी का चुनाव किया के इस जैसी सवारी पर संसार में कोई सवार ना हो सके।

मेअराज की यात्रा से संबंधित ये कुछ हिकमतें हैं जो यहाँ वर्णन की गई, वरना मेअराज की यात्रा का ये वर्णन एक ऐसा समुद्र है जिस का किनारा नहीं।

*शारिरीक मेअराज एवं अल्लाह तआला का दीदार*

रजब के महीने की 27 रात अल्लाह तआला ने सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को जागने की स्थिति में मक्का से बैतुल मक़्दस

से सातों आकाशों, जन्नत व दोज़ख एवं सातवें आकाश से अर्श, फिर वहाँ से जहाँ तक इस को स्वीकार था सैर कराई, अपने विशेष सामीप्य व निकटता एवं दीदार की कृपा से संबोधित किया तथा आप की द्वारा से संप्रदाय को नमाज़ का विशाल तोहफा प्रदान किया।

शारिरीक मेअराज क़ुरान करीम से साबित है, जैसा के अल्लाह तआला का आदेश हैः-

भाषांतरः पवित्र है वे जात जिस ने अपने विसेष बन्दे (हज़रत मुहम्मद मुसतफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) को रात के सीमित से हिस्से में मसजिद हराम से मसजिद अक़्सा तक सैर कराई, जिस के अतराफ हम ने बरकतें रखी है ताकि इन्हें अपनी निशानियाँ दिखाएँ, निश्चय वही सुनने वाला देखने वाला है।

(सुरह नबी इसराईलः 17:01)

शारिरीक मेअराज की घटना की दलील मेअराज की आयत में वर्णन *बिअबदिही* का शब्द है।

*अब्द* के अर्थ से संबंधित मुफस्सिरीन ने फरमाया है के आत्मा एवं शरीर के केन्द्र का नाम *अब्द* है। अब्द (बन्दे) ना केवल आत्मा को कहा जा सकता है तथा ना केवल शरीर को। अर्थात अब्द शब्द से मालूम हुआ के मेअराज आत्मा व शरीर के साथ हुई.

(अत तफसीर उल कबीर अल राज़ी, सुरह नबी इसराईलछ 17:01)

सहीह हदीसों में बुर्राख लाए जाने का वर्णन मिलता हैः-

(सहीह मुसलिम, हदीस संख्याः 429 / अल मुसतदरक अला सहिहैन लिल हाकिम, हदीस संख्याः 8946 / तहज़ीब उल आसार लित तबरी,

हदीस संख्याः 2771 / मुस्तक़रज अबी अवानह, हदीस संख्याः 259 / मुसनद अबी यअला, हदीस संख्याः 3281 / मुशकिल उल आसार लित तहावी, हदीस संख्याः 4377 / जामेअ उल अहादीस, हदीस संख्याः 553 / मुसनद अहमद, हदीस संख्याः 12841 / मजमअ उज़ ज़वाईद वा मम्बा उल फवाईद, हदीस संख्याः 237)

स्पष्ट है के बुर्राख जैसे जानवर पर पावन आत्मा नहीं बल्कि पवित्र शरीर की सवारी होती है।

मेअराज की यात्रा से संबंधित हज़रत मुल्ला जीवन रहमतुल्लाहि अलैह तफसीरात अहमदिय में मेअराज की आयत के प्रति कहते हैः-

भाषांतरः सहीह